वर्ष	अंक
48	11
नवम्बर 18	

559
गौराङ्गाब्द 533

• श्रीश्रीकृष्णचैतन्यनित्यानन्दौ जयतः •

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे

भगवद्भक्ति-साहित्य प्रचारार्थ 48 वर्षों से प्रकाशित मासिक

श्रीहरिनाम

आदि सम्पादक : व्रजविभूति श्रीश्यामदास : श्रीश्यामलालजी हकीम

श्रीचैतन्यसहस्रनाम

लोमाञ्चितः कंपधरः अश्रुमुखो विशोकहा।
हास्यप्रियो हास्यकारी हास्ययुग् हास्यनागरः।।41।।

श्रीकृष्णचैतन्य का शरीर रोमांचित, कम्पायमान, अश्रुधाराभिषिक्त शोभायुक्त रहता है, उसका दर्शन सब शोकों को हरने वाला है। वे हास्य–प्रिय, हास्यकारी, हास्यपूर्ण तथा हास्य–नागर हैं ॥41॥

कृपा कटाक्ष

● श्रीरामजीलालजी 'प्रभाकर'

कान्हा! तोरी मन्द मन्द मुसक्यान।
तू जाने या गोपी जाने, जान सके ना जहान।।
लखि जिन तेरो रूप रसीलो, बिसरी कुल गृह आन।
जप तप नेम धरम सब त्यागे, पूजा पाठ विधान।।
उन्मत मन ह्वै फिरे अकेली, व्याकुल है रहे प्रान।
मुख–म्यान सौं निकरी "प्रभाकर", कृपा कटाक्ष महान।।

www.harinampress.com • Telegram :09837021415 • email : dasabhas@gmail.com
www.shriharinam.com • Facebook Page and Youtube : Shri Harinam Press

श्रीहरिनाम प्रत्येक माह 15 व 16 को निश्चित ही भेजा जाता है और हजारों पाठकों को मिलता है। यदि आपको नियमित नहीं मिलता तो कृपया रजिस्टर्ड डाक से मँगाइये। न मिलने की सूचना मिलते ही आगामी माह से आपको रजिस्टर्ड में ट्रांसफर कर दिया जाता है। राशि जमा करके सूचित न करने से यह राशि बेकार पड़ी रहती है। अतः अवश्य सूचित करें।

उपेक्षा से भी श्रद्धा से भी

सम्पादकीय

श्रद्धया, हेलया वा भृगुवर नरमात्रं तारयेत् श्रीकृष्ण नाम।

अर्थात् श्रद्धा से या उपेक्षा से लिया गया नाम भी नरमात्र को तार देता है। निश्चित ही यह नाम भवसागर से तो तार देता है, लेकिन नाम का मुख्य फल श्रीकृष्णचरण सेवा उपेक्षा से लिये गये नाम से प्राप्त नहीं होती है।

प्रारम्भिक अवस्था की बात है, जो नाम नहीं करता है, वह जैसे तैसे खाते–सोते–उठते–बैठे– नाम का आश्रय लेना प्रारम्भ करे। इससे नाम में निष्ठा उत्पन्न होगी, श्रद्धा होगी, नाम का स्वाद उत्पन्न होगा, फिर नाम में अनुशासन होगा एवं नाम का मुख्य फल 'श्रीकृष्ण चरण सेवा' प्राप्त होगी।

हम यदि अभी शुरु हुए हैं तो चलेगा कि श्रद्धा, अश्रद्धा, उपेक्षा कैसे भी नाम लेते रहें, लेकिन यदि बरसों हो गये और अभी श्रद्धा, निष्ठा, रुचि नहीं है तो चेष्टा करनी होगी। इस भुलावे में नहीं रहना होगा कि कैसे भी नाम लेते रहें। यदि ऐसी स्थिति रही तो मुख्य फल प्राप्त नहीं होगा। केवल भवसागर से पार हो जाओगे।

तुलसीदास जी ने भी कहा–

भाव–कुभाव अनख आलसहू,
नाम जपत मंगल दिसि दसहू।

भाव, कुभाव, उपेक्षा, आलस से ही सही, ऐसे नाम जपने से दशों दिशाओं में मंगल होगा। श्रीकृष्णचरण सेवा प्राप्ति नहीं होगी। अतः साधक सावधान रहें। नाम में संख्या अनुशासन, संख्या वृद्धि, परिश्रम पूर्वक नाम का आश्रय, भाव–सहित नाम का आश्रय, ग्रन्थों के अर्थों का आस्वादन, नाम की महिमा का ज्ञान, सद्गुरुदेव–धारण व उनकी आज्ञा पालन, गुरु सन्तजन सेवा करते हुए नाम का आश्रय–स्मरण करते हुए घर में विराजमान श्रीविग्रह की सेवा का अभ्यास करने से ही चिन्मय श्रीकृष्णचरण सेवा की प्राप्ति होगी।

घर में विराजमान श्रीविग्रह की चरण सेवा जो सहज प्राप्त है, वह तो हम करें नहीं और चिन्मय शरीर से चिन्मय चरण सेवा की चाह करें–ये कैसी बेईमानी है। कभी प्राप्त नहीं होगी। उस चरण सेवा का अभ्यास इस चरण सेवा से ही होगा। और इस चरण सेवा में मन तभी लगेगा, जब 'हेलया' नहीं 'श्रद्धया' से अनुशासन से, मन लगाकर नाम जप की ओर हम बढ़ने का प्रयास करेंगे।

प्रैक्टीकल बात करें तो दिन में कुछ जप अवश्य एक आसन पर बैठकर एक निश्चित समय पर करें। इसे धीरे–धीरे बढ़ाते जायें। भले ही फिर कुछ जप चलते–फिरते बतराते करते रहें। हेलया वाला जप भवसागर से पार करेगा और एकान्त जप चरण सेवा प्रदान करेगा।

लेकिन नाम जप केवल डोलते–डोलते करेंगे तो बहुत देर हो जायेगी।जीवन छोटा है। अतः गम्भीरता से निष्ठा से एक आसन पर बैठकर भी नाम जप होना अति आवश्यक है। करके देखिये।

– दासाभास डॉ गिरिराज

facebook : dasabhas@gmail.com या
youtube : shri harinam press

Telegram-09837021415
यह नम्बर अपने कॉण्टेक्ट में सेव करके अपना नाम भेजें, सत्संग प्राप्त करें। गूगल प्ले से TELEGRAM इंस्टाल करें

कृपा कीजिये

● श्रीउमाशंकरअग्निहोत्री "शंकर"

कुंज में पाल्यदासी को रख लीजिये।
हाँ कृपा कीजिये अब कृपा कीजिये।।
नैना यूँ ना दरस को तरसते रहें,
और बोलनि सुननि को श्रवण स्वामिनी।
प्रेम करुणामई नैक सुधि लीजिये,
अब कृपा कीजिये कुछ कृपा कीजिये।। कुंज.।।
ये विरह की व्यथा स्वामिनी जी सुनो,
कब तलक मैं सहूँगी भला रात दिन।
नींद आती नहीं भूख भागी फिरे,
हाँ कृपा कीजिये अब कृपा कीजिये।। कुंज.।।
मैं तुम्हारी शरण हूँ सुनो कान दे,
एक "शंकर" की है आस, हे कामदे!
रूपराशि नयन भर निरखती रहूँ,
सो कृपा कीजिये अब कृपा कीजिये।। कुंज.।।

उत्सव-आदि में वितरण करने हेतु
छोटी-छोटी सरल-सहज बुकलेट्स

1

नामापराध • सेवापराध • वैष्णवापराध

100 रु. की 15 प्रतियां

2

गुरुदीक्षा

100 रु. की 8 प्रतियां

3

नित्यपाठ

गोपीगीत • गजेन्द्रमोक्ष • नारायण कवच • दामोदराष्टक
• शिक्षाष्टक • हनुमान चालीसा • सभी हिन्दी भावार्थ सहित

100 रु. की 10 प्रतियां

4

मनशिक्षा • उपदेशामृत

मूल एवं भावानुवाद-व्याख्या सहित

100 रु. की 10 प्रतियां

5

आठ अनर्थ • प्याज मना क्यों • भक्त के लक्षण

सरल भाषा में बोधगम्य

100 रु. की 10 प्रतियां

~~500~~ *नहीं केवल 400 रुपये*

हमारे सैण्ट्रल बैंक में जमा कराकर 7500987654
पर अपना पता मैसेज करने पर 53 प्रतियां घर बैठ प्राप्त करें।

ग्रन्थ प्रभु के विग्रह हैं

वितरण करने हेतु एक साथ 100 / 200 प्रतियों पर आकर्षक छूट

मासिक श्रीहरिनाम गत 48 वर्षों से नियमित रूप में प्रकाशित हो रहा है। अनेक विद्वान्–संतों साहित्यकारों की सेवा में सादर भेंट स्वरूप यह निःशुल्क भेजा जाता है।

श्रीहरिनाम के लिफाफे पर पते की स्लिप चिपकी रहती है उस पर सर्वप्रथम पाठक नम्बर लिखा रहता है। उसके पश्चात् आपकी कैटेगरी लिखी होती है। उसके पश्चात् वह मास व सन् लिखा होता है, जब तक कि, आपकी सेवा में श्री हरिनाम भेजा जायेगा। पुनः राशि भेजने पर यह मास व सन् स्वतः ही आगे बढ़ जाता है। इस पर सदैव दृष्टि रखनी चाहिये।

घाटे का प्रकल्प

'श्रीहरिनाम' किसी भी प्रकार से कोई आय का साधन नहीं है अपितु प्रतिवर्ष आर्थिक घाटे से प्रकाशित होता है। उद्देश्य है भगवद्भक्ति साहित्य का प्रचार–प्रसार।

संसार में बहुत कम ऐसे होते हैं, जिन्हें प्रभु ने धन दिया है। उन धनवानों में फिर बहुत ही कम ऐसे हैं जिन्हें प्रभु ने उदार हृदय दिया है, उन उदार हृदय वालों में भी बहुत कम ऐसे हैं जो अपने लिये तो उदार हैं दूसरों के लिये भी उदार हैं। दूसरों के लिये उदार वालों में बहुत ऐसे हैं जो इस घाटे को घाटा नहीं रहने देते और अपना पूर्ण सहयोग प्रदान कर धन से सेवा करते हैं।

विगत 48 वर्षों से श्री हरिनाम एवं अन्य गौड़ीय वैष्णव साहित्य द्वारा धार्मिक साहित्य की जो सेवा 'श्री हरिनाम संकीर्तन मण्डल' ने की है, उसे सारा विश्व जानता है और जानने लगा है। बहुत ही कम बजट में श्रीहरिनाम का प्रकाशन किया जाता है। कहीं भी कोई अपव्यय जैसी परिस्थिति न बने इसका विशेष ध्यान रखा जाता है। इधर के वर्षों में अधिक उपयोगी सरल सामग्री देने में हम प्रयासरत हैं। इसका स्वरूप भी अति आकर्षक बनाने का प्रयास किया गया है।

एक ही सज्जन काफी है

वैसे तो श्रीहरिनाम पर व्यय होने वाली वार्षिक राशि को वहन करने में पूर्ण सक्षम किसी भी एक सज्जन से निवेदन करके प्राप्त किया जा सकता है। लेकिन हम चाहते हैं कि अनेक लोग इस सेवा में जुड़े रहें, क्योंकि मानवीय स्वभाव के कारण अपने साथ अनेक साथियों, हित – चिन्तकों की सह भागिता से अतिशय सन्तुष्टि एवं प्रसन्नता का

अनुभव होता है। और एहसास होता है कि हम अकेले नहीं हैं। अनेक वैष्णव जन हमारे साथ हैं।

आनन्द बाँटिये

हम चाहें तो एकान्त में अपने परिवार के दो चार व्यक्तियों के साथ बैठकर भागवत–कथा श्रवण कर सकते हैं। जन्मदिन मना सकते हैं। लेकिन आज श्रीमद्भागवत कथा एवं अन्य लौकिक जन्मदिन अथवा भागवतीय उत्सवों हेतु विशाल आयोजन करके सैकड़ों व्यक्तियों को आमंत्रित किया जाता है– और जब सबके साथ उस आनन्द का अनुभव किया जाता है तो आनंद अनेक गुना हो जाता है। नियम है– बाँटने पर आनन्द सदैव वृद्धि को प्राप्त होता है।

केवल कुछ राशि : केवल एक बार

केवल कुछ रुपये– सम्भवतः आज की एक छोटी सी राशि जिसका अस्तित्व लगभग न के बराबर है और यदि व्यावसायिक बुद्धि से भी सोचें तो जो राशि हम देते हैं उससे कहीं अधिक मूल्य का साहित्य हमारे द्वार पर पहुँचता है। इसके अध्ययन से जो आध्यात्मिक लाभ होता है, उसका तो कोई मूल्य ही नहीं है।

यदि आप सामर्थ्यवान हैं

हमारे बहुत से ऐसे परिचित, अपरिचित पाठक–हितचिन्तक हैं जो अपनी ओर से एक साथ विपुल राशि प्रेषित कर अन्य–अन्य पाठकों, अपने रिश्तेदारों, अपने मित्रों को श्रीहरिनाम प्रेषित करवाते हैं।

अमूल्य आध्यात्मिक लाभ–

अतः मेरा निवेदन है कि इस सत्साहित्य का स्वयं अध्ययन करें। अपने सत्संगी मित्रों, रिश्तेदारों, परिकर, परिवारों को इसे पढ़ने हेतु प्रोत्साहित करें। हमें पता भेजें। हम उन्हें लगातार तीन माह तक श्रीहरिनाम फ्री भेजेंगे।

प्रकाशन–अनुदान–

गतवर्ष मण्डल को निम्नलिखित सज्जनों द्वारा ग्रन्थ प्रकाशन में अर्थ–अनुदान प्राप्त हुआ है। मण्डल इनका चिरकृतज्ञ है। प्रभु के श्री चरणों में प्रार्थना है कि ये सदैव श्रीहरिभक्ति में येन केन प्रकारेण संलग्न रहते हुए हमारा मार्ग दर्शन एवं उत्साहवर्धन करते रहें।

श्रीगोपालदास जौहरी, श्रीगोविन्द ललिता देसाई, श्रीप्रकाशजी, श्रीगुरुदास देसाई, श्री उदयचन्द्र झा, श्रीमती कल्पना शर्मा, श्रीमती दुग्गल, श्रीगौरीशंकर रेखा खण्डेलवाल, श्री मदन जी नाभा, श्री हरीश कुमार शर्मा, श्रीबाल कृष्ण देसाई, श्रीविजय अग्निहोत्री जी, समस्त वैष्णव गण, लेखक गण, हित चिन्तक जन को मेरा हार्दिक प्रणाम।

खीर का एक चावल

सबसे सरल

इस संसार में जितने भी काम हैं,
जैसे- शादी, व्यापार, बच्चे, पढ़ाना-लिखाना,
धन कमाना, परिवार चलाना,
मकान बनवाना, पढ़ना, सलैक्शन होना,
देश-परदेश में भागना आदि-आदि।
इन सबसे सरल है- भगवान् की भक्ति,
भगवद् भजन और भजन में भी
सबसे सरल है- नाम जप, संकीर्तन।
अतः चिन्तन करिये और संसार आदि को
उतना प्रयोग करिये
जितना भजन में प्रयोजन हो।
भजन करिये, चैन से रहिये।

नाम संकीर्तनं यस्य

पुराण शिरोमणि, प्रमाण स्वरूप श्रीमद्भागवत
का सार स्वरूप अन्तिम श्लोक है-
नाम संकीर्तनं यस्य सर्वपाप प्रणाशनं।
प्रणामो दुःख शमनस्तं नमामि श्रीहरिः परम्।।
यहाँ भी नाम कीर्तन को ही सार रूप में
निरूपण किया है। साथ ही नाम को पाप
एवं दुःख हरने का साधन स्थापित कर
लौकिक-सकाम भक्तों का भी
ध्यान आकर्षित किया है।
अर्थात् किसी भी दुख पाप के लिये कोई
मन्त्र-तन्त्र की ओर
क्यों भागना, नाम है न!!

दरबार में राधारानी के

दरबार में राधारानी के
दुखदर्द मिटाये जाते हैं
दुनियाँ के सताये लोग
यहाँ सीने से लगाये जाते हैं
संसार नहीं है रहने को
यहाँ दुख ही दुख है सहने को
भर भर के प्याले अमृत के
यहाँ रोज पिलाये जाते हैं
वो दयामयी कहलाती है
वो कृपामयी कहलाती है
भक्तों के मन को भाती है
दुनियाँ में जो बदनाम हुए
पलकों पे बिठाये जाते हैं
जो राधे राधे कहते हैं
वो प्रिया शरण में रहते हैं
करती हैं कृपा
वृषभानुसुता
वो महल बुलाये जाते हैं
पल पल में आश निराश हुयी
पल पल घटती छिन छिन
बढ़ती दुनियाँ
जिनको
ठुकरा देती
वो गोद बिठाये जाते हैं

यह प्रसंग 'ब्रज की खीर' नामक पुस्तिक के पृष्ठ 104 से लिया गया है। ऐसे ही प्रसंगों के 160 पृष्ठ आस्वादन करने हेतु 100रु. हमारे सैण्ट्रल बैंक में जमा कराकर 7500987654 पर पता मैसेज कीजिये। घर बैठे ग्रन्थ प्राप्त कीजिये। साथ में गुरुदीक्षा बुकलेट फ्री

गोपाष्टमी
15 नवम्बर 2018
को प्रस्तुत

श्रीश्यामदासजी का सूचक कीर्तन

श्री वृन्दावन धाम में, ब्रज-रज पाई आज।
'श्यामदास' तुम धन्य हो, सकल सम्हारो काज।।
संकीर्तन के मध्य में व्रजरज दिया लिटाय।
वृन्दावन निज कक्ष में चरण-युगल लिये पाय।।
गोपाष्टमी पावन दिवस दियौ देह अब त्याग।
अक्षय नवमी दिवस दिन कियौ समर्पित आग।।
ललितलड़ैती कृपा-वर जन्मे तुम एक सन्त।
रघुनाथ चाह्यौ नहीं, कृपा करी भगवन्त।।
डेरागाजीखान में, जन्मे शुभ कुल नाथ।
सीतादेवी मात हैं, पिता हुये रघुनाथ।।
महाप्रभु की कृपा से, मिले निताई चाँद।
वैष्णव से दीक्षा मिली, देवकी श्री प्रभुपाद।।
उत्कट अभिलाषा जगी, श्रीब्रज रज का वास।
बार-बार इच्छा करें, बनूँ हरी का दास।।
भक्त पिता थे संग में, था परिवार सकल।
कठिनाई कितनी पड़ें, निश्चय सदा अटल।।
छोड़ छाड़ कर ग्राम निज, आये श्रीब्रज धाम।
रोगी की सेवा करी, तज अभिलाषा दाम।।
नाम चला खानदान से, बने हकीम श्रीश्याम।
गाम गाम और नगर में, खूब कमाया नाम।।
कण्ठी औ माला धरी, तिलक सजाया भाल।
नितप्रति संकीर्तन करें, बीतें सालों साल।।
हरिनाम की आस ले, कीर्तन करें सत्संग।
सेवा करे नित नियम से, पोषें भक्ति अंग।।
होली सम्मेलन करें, होय युगल का रास।
श्रोता भाव विभोर हों, मुक्त होंय सब त्रास।।
ग्रन्थ बड़े अध्ययन करे, कृपावन्त हुये सन्त।
आशिष की वर्षा करें, हरि की कृपा अनन्त।।
ग्रन्थ प्रकाशन नियम लें, कलम उठाई श्याम।
पढ़ते सुनते थकें नहीं, चिन्तन आठों याम।।
ग्रन्थन की टीका करी, बंगला संस्कृत ज्ञान।
विद्वत्गण पूजें सभी, सकल बढ़ाया मान।।
ग्रन्थ बहुत मुद्रित करे, षड् गोस्वामी सार।
देह बनी अनासक्त सी, प्रभु ने दुख दिये टार।।
ब्रजविभूति के मान से, दो दो बार सम्मान।
अर्पण करें प्रभु चरण में, नहीं आये निज भान।।
कृपा 'भागवत' से मिला, भक्ति युक्त परिवार।
बार-बार सुमिरन करें, संतों का उपकार।।
तीन चीज त्यागी नहीं संकीर्तन-हरिनाम।

दीपावली-पूजन

दीपावली के दिन डॉक्टर-क्लीनिक होने के कारण दुकान पर आपने कभी पूजन नहीं किया। भाव यह था कि दुकान पर व्यापार बढ़ाने की कामना का अर्थ है अधिक रोगी आएँ- अर्थात् रोगों की वृद्धि हो- ऐसी कामना अनर्थ है। अतः रात्रि के समय घर पर परिवार में बैठकर संक्षिप्त में स्वयं ही श्रीलक्ष्मी-गणेश पूजन होता है- वह भी लक्ष्मी स्तुति के साथ-साथ महामन्त्र एवं श्रीराधाकृपाकटाक्ष के पाठ के साथ।

सेवा प्रभु की प्रेम से पत्रिका श्रीहरिनाम।।
कृपा उन्हीं की शक्ति से चर्चित श्रीहरिनाम।
करता कोई ओर है होता 'गिरि' का नाम।।
घर-गृहस्थ में वास कर हृदय सदा प्रभु नाम।
प्रभु करें इनका सदा, करते ये प्रभु-काम।।
आत्मकथा की पुस्तिका लिखी स्वयं श्रीश्याम।
गुण-गाथा-अनुभव सभी प्रभुलीला गुणनाम।।
बंगला में मुद्रित सभी गौड़ीय ग्रन्थ अपार।
हिन्दी पाठक शास्त्र का कैसे पाएँ पार।।
यही भाव मन धार के किये ग्रन्थ अनुवाद।
एक नहीं, दो दो नहीं, सौ-सौ हैं अविवाद।।
व्याघ्र एक झपटा कभी लीन्हों कृष्ण बचाय।
गोपीनाथ कृपा करी रेल गयी झटकाय।।
चल मन वृन्दावन चलें-पूर्ण हुयी ये आस।
यही रहे, बस गये यहीं, पाया ब्रजरज वास।।
पत्नि गयी, अरु पुत्र इक गया युवा ब्रज माहिं।
विचलित किया अनेक ने, तुम ब्रज छोड़ा नांहिं।।
नारद जी ने नींद से तुरतहि दिया जगाय।
कवच पाठ कर श्याम तू कैसे गया भुलाय।।
श्रीनाथ दर्शन दिये गलबहियाँ दी डाल।
श्याम आज अति मुदित मन हो गये मालामाल।।
हाथ पकड़ खींचा प्रभु राधागोविन्द नाथ।
मस्तक पर चन्दन दिया ऊँचा हो गया हाथ।।
जीऊँ तो जीता रहूँ करूँ ग्रन्थ दो चार।
नहीं जीऊँ तो कृष्ण की जैसी इच्छा यार।।
बुधवार दिन आज भी होता नाम अखण्ड।
हमरे बस की है नहीं तुम्हरी कृपा प्रचण्ड।।
लेखक-अनुवादक हुए थे अति उच्च विद्वान।
श्रवण भक्ति छोड़ी नहीं सुनते कथा युत कान।।
ब्रज चौरासी कोस की परिकम्मा तुम कीन्ह।
पैदल-पैदल चलत भये दर्शन सब तुम चीन्ह।।
स्वयं पधारे ग्रन्थ तुव गृह में आय विराज।
ढूँढ़-ढूँढ़ कर थकि गये सहज भयो अब काज।।
भक्त एक अड़ गये जबै दीक्षा दीन्हीं एक।
शिष्य बनायौ एक बस भक्त बनाये अनेक।।
गौड़ीय वैष्णव जनन के आप पूज्य प्रिय तात।
झटका पटकी में 'गिरि' हम समझे नहीं बात।।
कृपा बनाये राखियों प्रभु चरणन मति होय।
तेरी जैसी भयी है, 'गिरि' की भी गति होय।।

एक वर्ष के लिए परलोक गमन को टाला

श्रीश्यामदासजी का कुल भी ऐसा जिसमें परमविरक्त स्वामी ललितलड़ैती जी जैसे व्रजरसनिष्ठ सन्त हुए। श्रीप्रियाप्रियतम की निकुंजलीलाओं का जिन्होंने अपने ग्रन्थों में वर्णन किया और वह भी व्रज-वृन्दावन से कोसों दूर डेरागाजीखान में रहकर। सिद्धि ऐसी कि अपनी गृहिणी की मृत्यु को ठीक एक वर्ष के लिए इसलिए टाल दिया कि इसमें भक्ति का बीजारोपण कर इसे प्रभु के धाम पहुँचाना है और ठीक एक वर्ष बाद एक दिन पहले ही उसके कफन सामिग्री आदि की व्यवस्था करके रख ली और निश्चित समय पर उसे लीलाप्रविष्ट करा दिया।

सौ से अधिक वैष्णव ग्रन्थ एवम् श्रीहरिनाम के आदि सम्पादक

व्रजविभूति श्रीश्यामदासजी की गुण गाथा

15 नवम्बर 2018, श्रीगोपाष्टमी तिथि। आज के दिन ही श्रीबालकृष्ण ने गोचारण प्रारंभ किया और आज के ही दिन इस पत्रिका श्रीहरिनाम के आदि सम्पादक (1970 से 2005) व्रजविभूति श्यामदासजी (1921–2005) का तिरोभाव हुआ।

ऐसी पुण्यतिथि गोपाष्टमी के दिन रात्रि में अपने गुरुस्थान शृंगारवट की रज पर अपने निवास में शरीर त्याग दिया और अक्षय नवमी के दिन उनका श्रीधाम वृन्दावन के यमुना तट पर अग्नि संस्कार हुआ। उनके जीवन के दोनों पक्ष : लौकिक एवं आध्यात्मिक बहुत संयत एवं आदर्श स्वरूप रहे। ऐसे लोग विरले होते हैं, जो लोक में भी सुख–साधन–सुविधा संतति–सम्पत्ति सम्पन्न हों और अध्यात्म विषय में भी भजन, निष्ठा, आसक्ति पूर्ण श्यामसुन्दर की नित्यलीला के उपासक हों और उनका अन्त एक उदाहरण हो।

ऐसे हमारे पूज्य पिताश्री के जीवन–वृत्त पर एक आकर्षक ग्रन्थ 'व्रज विभूति श्रीश्याम स्मृति' प्रकाशित हुआ है। उसमें प्रकाशित अनेक संस्मरणों में से कुछ संस्मरण इस अंक में प्रकाशित किये जा रहे हैं और यह पूरा अंक उन्हें ही समर्पित है।

स्थान अनुसार अन्य आलेख या स्तंभ विश्राम पर रहेंगे। आगामी अंक पुनः अपने नियमित स्वरूप में प्रकाशित होगा।

त्याग दिया निष्प्रयोज्य शरीर

श्रीश्यामदासजी अत्यधिक वृद्ध होने पर भी कुर्सी पर बैठकर सेवा करने लगे थे। आपने कई छड़ियाँ व साधन स्वहस्तनिर्मित बनाये हुए थे जिनसे दूर की चीजों को पास लेते थे और सेवा एवं शृंगार ऐसा कि कहीं भी कोई त्रुटि अव्यवस्था प्रतीत न होती थी। हमलोग कई बार कहते थे कि अब आपको कष्ट होता है आप छोड़ दें–हम सेवा कर देंगे–तो कहते मैं सब काम तो करता हूँ। खाता हूँ–पीता हूँ–बोलता हूँ केवल सेवा करने के लिए ही वृद्ध हो गया हूँ ? एक बार विशेष आग्रह करने पर बोले कि "सुनो जिस दिन मेरी ठाकुर–सेवा और ग्रन्थ सेवा छूट जायेगी उस दिन के बाद मेरा शरीर अधिक दिन नहीं रहेगा– अतः अब फिर मेरे से सेवा माँगने की बात मत करना'। और उस दिन से किसी ने भी उनसे ठाकुर सेवा के लिए आग्रह न किया। हुआ भी यही कि लीला प्रवेश के 10–12 दिन पूर्व ही उनकी सेवा छूट गयी थी। छोटे सुपुत्र डॉ भागवतकृष्ण ने सेवा सँभाली और सेवा छूटने के 10–12 दिन के अन्दर ही उनका शरीर शान्त हो गया। इतने पर भी वे प्रायः प्रतिदिन प्रातः सेवा के लिए तैयार होते थे–लेकिन हिम्मत सी हार कर कहते थे–बेटा पता नहीं कुछ ऐसी कमजोरी सी है–शायद सेवा मेरे से नहीं हो पायेगी। सेवापराध बनेगा–तुम सेवा कर दो। मेरा कुछ अपराध बन गया है सेवा नहीं कर पा रहा हूँ।

उनकी इस परिस्थिति को देखकर मुझे दिलहौल हो गया था और मुझे उनके 'वाक्य' याद आते थे। परिवार से फोन आने पर जब बहनें व रिश्तेदार पूछते थे कि पिताजी कैसे हैं तो मैं पता नहीं क्यों फोन पर रोने लगता था। सभी चिन्तित होते थे–लेकिन दूर–दूर तक ऐसी स्थिति न थी कि पिताजी अब नहीं रहेंगे–लेकिन अन्ततः उनकी वाणी सत्य हुयी। सेवा रहित होने पर उन्होंने अपने शरीर को निष्प्रयोज्य मानकर त्याग दिया और नित्य सेवा में प्रविष्ट हो गये।

ग्रन्थ स्वयं पधारे

श्रीश्याम स्मृति

श्रीरूपगोस्वामी के हंसदूत का प्रकाशन पत्रिका में (क्रमशः) देने का संकल्प उठा। बाबा कृष्णदास ने हिन्दी में छपाया था। आरम्भ करने पर विचार आया कि बाबा के मूल में त्रुटि विच्युति सम्भव है–उनके प्रकाशनों में प्रायः देखी जाती थी। आठ पेज पत्रिका के छप गये, किन्तु दिल में श्याम यही सोचता था कि मूल ग्रन्थ शुद्ध कहीं से मिलता तो ठीक संकलन हो जाता। श्याम एक आले में पड़े हुए रद्दी कागज ठीक करने पुस्तकालय में गया। देखता क्या है कि पुरीगोस्वामी द्वारा प्रकाशित हंसदूत की एक प्रति उन कागजों में पड़ी है। कहाँ से आयी ? कौन रख गया उसे, आज तक नहीं समझ आया। प्रेस से पता किया। कभी किसी ने यह पुस्तक छपाई हो। पता लगा किसी ने नहीं छपाई, न दी। पुस्तक ऐसी लगती थी कि कहीं प्रेस से आयी है–कम्पोज के चिह्न हैं अति पुरानी है। अब कहना यह कि जब किसी पुस्तक का संकल्प उठता वह प्रभु कृपा से अपने आप बिना माँगे श्याम के पास आ जाती।

और तो और हरिनाम में क्रमशः भक्तचरित्र देने का संकल्प उठा। भक्तमाल के कई संस्करण श्याम के पास थे किन्तु सोचा यदि कल्याण का हिन्दी भक्तांक कहीं से मिल जाये तो और भी अच्छा होगा तीसरे दिन दिल्ली से डालमिया जी ने एक प्रति नयी भक्तांक की भेज दी, जो उन्होंने दुबारा प्रेस में छपायी थी उन्हीं दिनों। इस विषय में न तो कभी श्याम को पता था कि अंक छप रहा है, न श्याम ने डालमिया जी से अनुसन्धान ही किया था।

इसी प्रकार चैतन्यचरितामृत के छपने के बाद हर तरह से ग्रन्थ अपने आप आने लगे। एकदिन एक पुजारी का लड़का भक्तिरसामृत सिन्धु तथा उज्ज्वलनीलमणि श्रीहरिदास द्वारा सम्पादित (बंगला) प्रेस में श्याम के पास ले आया। बोला–ये पुस्तकें बेचूँगा यदि आपके काम की हों–तो ले लो। अनुपलब्ध ग्रन्थ थे। उसने कुछ रुपये लेकर दोनों ग्रन्थ सहर्ष दे दिये। भक्तिरसामृत सिन्धु उसके आने पर श्याम ने सम्पादित किया।

श्रीकृष्ण की संवित् शक्ति के मूर्त विग्रह हैं श्रीगुरुदेव एवं ग्रन्थ इसलिये कहा ग्रन्थ प्रभु के विग्रह हैं

श्रीहरिनाम संकीर्तन

श्रीश्याम स्मृति

विवाह हो या जन्मदिन श्रीहरिनाम संकीर्त्तन का एक कार्यक्रम अवश्य होता है। जीवन पर्यन्त प्रातः एक घण्टे के श्रीहरिनाम संकीर्त्तन में प्रतिदिन जाते रहे। प्रति बुधवार को सायं 8 से 10 बजे तक होने वाले संकीर्त्तन में उनकी दृढ़ निष्ठा थी। उसमें उनका नागा कभी नहीं होता था। अनेक ग्रन्थों का सम्पादन करने पर भी बुधवार को अपने पौत्र संजय से नियम से विभिन्न ग्रन्थों का पाठ भी वह अवश्य श्रवण करते थे। श्रीहरिनाम–संकीर्त्तन में उनकी ऐसी निष्ठा थी कि इसे वे सर्वसाधन सार मानते थे। हमारी पूज्य माता जब शरीर छोड़ रही थीं, तो सभी परिवारीजनों से कहा कि जोर से उच्चनाम संकीर्त्तन करो। इसे नित्यलीला में जाना है जो केवल नाम संकीर्त्तन से ही सम्भव है। नाम संकीर्त्तन चल रहा था। आप अचानक उठे और बोले अरे गोपीचन्दन लाओ–इसे द्वादश तिलक लगाना है बिना वैष्णव वेश के लीला में कैसे जायेगी ? शीघ्र ही हथेली पर चन्दन रगड़ा और अंगों पर 'माधवाय नमः–केशवाय नमः' आदि कहकर द्वादश अंगों पर तिलक लगाया–संकीर्त्तन चल रहा था। देखते ही देखते प्रसन्न मुद्रा में माँ ने लीला–प्रवेश किया। ऐसे में न प्रसन्न होते बनता था न रोते बनता था।

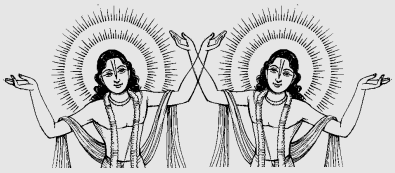

अपने आप पधारे श्रीश्रीनिताई गौर

श्रीश्यामदास जी के मन में एक बार विचार आया कि प्रियाप्रियतम की श्रीविग्रह सेवा के साथ–साथ श्रीश्रीनिताई–गौर के श्रीविग्रह भी प्रतिष्ठित करके सेवा–पूजा की जावे। लेकिन अवस्था एवं परिस्थिति को देखकर विचार त्याग ही दिया। कुछ ही दिन बाद आपके पुत्रवत् मित्र श्रीगोपाल घोष आये। निताई–गौर एवं प्रियाप्रीतम के श्रीविग्रह जो एक ही साथ विराजमान थे एक थैले से निकालकर दिये–बिलकुल शृंगारवट में पूजित श्रीविग्रह के प्रतिनिधि विग्रह थे। आपका हृदय गद्गद् हो गया। आँखें अश्रुपूरित हो गयीं। निताईचाँद स्वयं घर पधारे। आज तक हमारी सेवा में अब भी हमारी सेवा पूजा स्वीकार कर हमें कृतार्थ कर रहे हैं।

श्याम प्रभु की ग्रन्थ सेवा में आविष्ट रहने पर भी गृहस्थ की अनेक समस्याओं में अनायास उत्तीर्ण हो जाता। वे सब समाधान महाप्रभु कर देते। डेरागाजीखान में श्रीपिताजी के साथ डेढ़ मास अकेला अस्पताल में उनकी सेवा में रहा। विभाजन के बाद वृन्दावन में निशिदिन अस्पताल में १६ दिन रहा पिताजी साथ। गृहिणी ईश्वरीदेवी के आप्रेशन काल में १७ दिन अकेला तीर्थराम अस्पताल में रहा बेटे–बेटियों–परिवारीजनों का पूर्ण सहयोग रहता ही था। बड़ा सुपुत्र नित्यानन्द जयपुर गया अपनी लड़की से मिलने। वहाँ उसकी बहन भी रहती थी। वहाँ अचानक उसे ब्रेन हैमरेज हुआ। बेहोशी की हालत में वल्लभ–अस्पताल में उसके पास लड़के की बहु के साथ १७ दिन अस्पताल में रहा। श्रीअच्युतानन्द गोविन्द नामोच्चारण से उसे पूर्ण स्वस्थता प्राप्त हुई। दिल्ली में तसल्ली के लिए जब उसकी सी० टी० स्कैन की रिपोर्ट और जयपुर के परचे आल इण्डिया के ब्रेन स्पेशलिस्ट को दिखाये, तो वह इतना कह कर रह गया चकित होकर कि आप बड़े भाग्यशाली हैं श्रीमहाप्रभु श्रीगोविन्द जहाँ अपनी सेवा में श्याम को व्यस्त रखते थे, वहाँ सांसारिक व्यग्रता में भी श्याम का साथ नहीं छोड़ते थे।

अपने दामाद के ब्रेनट्यूमर के आप्रेशन के समय जिसे क्वेत से हवाईजहाज में वैलूर लाया गया है– श्याम को हवाईजहाज से अपनी लड़की को वहाँ लेकर जाना पड़ा। वहाँ ८ दिन अस्पताल में रहा। दुर्भाग्य से उसका वहीं देहान्त हो गया। इस प्रकार श्याम का अस्पतालों का दुखदकाल भी अनेक बार आया।

इतना ही नहीं स्वयं श्याम को आगरा में अपने कैंसर का आप्रेशन कराना

गृहस्थ के दायित्व पूर्ण किये

श्रीश्याम स्मृति

पड़ा। गृहिणी ईश्वरदेवी का हर्निया आप्रेशन कराना पड़ा, जिसके बाद वह जलोदर रोग से पीड़ित होकर २१–४–२००१ को व्रजलीला में प्रविष्ट हो गयी। सारांश यह है कि इस प्रकार की आधि–व्याधियाँ कर्मभोग रूप में अनेक बार आयीं परन्तु सबका भोग करते हुए श्याम का आत्मबल नहीं हारा, क्योंकि श्रीमहाप्रभु श्रीनिताई–गौर ने उसे अपनी सेवा के लिए एक तुच्छ सेवक रूप में अपना रखा था, रखा है।

बाबा गंगाधर जो भूमिका लाया था वह थी परमसन्त श्रीकामिनी कुमार घोष की। कलकत्ता से पूरा सैट अब श्याम के पास

दुर्लभ सन्त-दर्शन

श्रीश्याम स्मृति

आगया था। श्याम उसे उन्हें लौटाने और उनके दर्शन करने के लिए गोपीश्वर रोड पर उनके निवास स्थान पर एकदिन लगभग ११–१२ बजे पूर्वाह्न में गया। उनकी सुपुत्री ने कहा, बाबा ऊपर की मंजिल में विराजते हैं, आप ऊपर इन सीढ़ियों से चले जाइये। श्याम ने वहाँ देखा कि वे सन्त पञ्चांग प्रणाम की मुद्रा में पृथ्वी पर पड़े हुए हैं। उनके मुँह से लार और नेत्र से आंसुओं की अजस्रधारा बह रही है, उन्हें बाहर की कुछ सुध–बुध नहीं है। श्याम कुछ देर कमरे के बाहर दरवाजे पर खड़ा उनकी प्रेमावस्था को देखता रहा। कुछ देर के बाद उन्हें बाह्य ज्ञान हुआ–हा निताई ! हा गौर कहकर सीधे हुए तो श्याम ने अन्दर जाकर उन्हें प्रणाम किया। अपना परिचय भी दिया। ग्रन्थ और कुछ फल ठाकुरभोग के लिये आगे रखे। परम भागवत अति प्रसन्न हुए। भूमिका का अनुवाद उन्हें पहले मिल चुका था। श्याम के मस्तक पर अपना वरदहस्त रखते हुए बोले, अब तुम्हें श्रीचरितामृत भी मिल गया है। उसका अनुवाद तथा हिन्दी में प्रकाशन की यथाशीघ्र चेष्टा करो वे भक्ति प्रचारिणी सभा के संस्थापक–अध्यक्ष थे। उन्होंने श्याम को उस संस्था की कार्यकारिणी समिति का सदस्य भी नियुक्त किया।

श्याम का व्रज से जाना पुराना चलन

श्याम के रंग में जीवन जो रंग जायेगा।
कारी कामर में सब दुःख समा जायेगा।।
श्याम पाये बिना जीना जीना कहाँ,
श्याम को अपने दिल में तू कब लायेगा।
श्याम तेरा नहीं श्याम मेरा नहीं,
मत बढ़ा बात को कुछ ना हाथ आयेगा।।
श्याम तेरा भी है, श्याम मेरा भी है,
हम सभी श्याम के, कब समझ आयेगा।
पास हो श्याम के दास हो श्याम का,
सेवा करने वो वृज की न क्यों आयेगा।
श्याम कहता रहा श्याम सुनता रहा,
श्याम कैसे उसे दूर रख पायेगा।।
श्याम का बृज से जाना पुराना चलन,
श्याम कब है रुका अब जो रुक पायेगा।
श्याम की आस में श्याम की प्यास में,
श्याम के घर वो एक दिन चला जायेगा।
श्याम घर श्याम के जाके दिखलायेगा,
श्याम घर श्याम के अब नजर आयेगा।।

श्रीराधा गोविन्दनाथ की कृपा

श्रीश्याम स्मृति

डॉ० श्रीराधागोविन्दनाथ, जिनकी श्रीचैतन्यचरितामृत की भूमिका का अनुवाद श्रीमद्वैष्णव–सिद्धान्तरत्न संग्रह रूप में छपा, उसकी दो प्रतियाँ श्याम ने कलकत्ता में उन्हें भेज दीं। वह महानुभाव इतना प्रसन्न हुआ कि उसकी उदारता का स्रोत प्रवाहित हो उठा। उन्होंने अपने द्वारा रचित श्रीचैतन्य–चरितामृत, श्रीचैतन्य भागवत आदि सब बंगला प्रकाशन श्याम को सर्वथा निःशुल्क भेज दिये। यहाँ तक कि श्रीगौड़ीयवैष्णव दर्शन के बड़े–बड़े समस्त खण्ड भी भेजे। श्याम को आश्चर्य हुआ कि श्रीनिताईचाँद क्या लीला रचना चाहते हैं। श्याम ने गौड़ीयदर्शन का आंशिक अध्ययन कर डाक्टर महोदय को लिखा कि खेद है कि यहाँ हिन्दी समाज इस अलौकिक साहित्य –रत्न के देखने–पढ़ने से वंचित रहा। आजतक चरितामृत का भी हिन्दी अनुवाद हिन्दी–समाज को किसी ने प्रस्तुत न किया।

क्या लिखे श्याम उन महानुभाव महावदान्य डाक्टर महोदय की उदारता को। उन्होंने एक पत्र लिखकर वैधानिक अधिकार अपने ग्रन्थों के अनुवाद, प्रकाशन आदि का श्याम को भेज दिया। आंशिक, अक्षरशः, ग्रन्थ का नाम बदल कर, किसी रूप में श्याम को सर्वाधिकार सौंप दिये। महादुःख यह है कि श्याम ने उनके दर्शन तक न किये, उनके चरणस्पर्श का सौभाग्य प्राप्त न किया। उनके नित्यधाम प्राप्ति के बाद एक दिन अचानक उनके सुपुत्र अपनी पत्नी सहित वृन्दावन आये और श्याम को प्रेस में आकर मिले। अपना परिचय देकर मुझे पूज्य पिताजी का दर्शन मानो करा दिया। अत्यन्त विनम्र, परम वैष्णव थे वे। कहना यह है कि समस्त प्रकाशन श्रीपाद राधागोविन्दनाथ ने श्याम को डाकखर्च भी लिए बिना अन्त समय तक आशीर्वाद रूप में दिये, जो मूक प्रेरणा देते रहे उन्हें हिन्दी में प्रकाशित करने की। ऐसी उदारता किसी ग्रन्थ सम्पादक, संकलनकर्ता से, स्वप्न में भी अनुमान नहीं की जा सकती। (उनकी जीवनी, उनकी प्रकाशन सूची चैतन्य सम्प्रदाय नामक ग्रन्थ में श्याम ने प्रकाशित की है)।

श्याम ने जब हिन्दी अनुवाद की अनुमति माँगी, तो झट बोले, बिल्कुल नहीं, तुम मेरे दो शतकों का अनुवाद नहीं छपा सकते।

स्पष्ट वक्ता आत्मबली

श्रीश्याम स्मृति

श्याम कुछ सहम गया। वे फिर बोले, मेरी शर्त है अगर सारे शतक अनुवाद कर छपाओ और वचन दो तो तुमको मेरी हर प्रकार अनुमति है। श्याम ने उनका आशीर्वाद माँगा, प्रसन्नतापूर्वक उन्होंने आशीर्वाद किया। श्याम ने प्रथम दो शतक छापे और भूमिका में श्रीप्रबोधानन्द सरस्वती के ग्रन्थों का उल्लेख करते हुए ''श्रीराधारससुधानिधि'' को भी गिनाया।

इस बात पर श्रीराधावल्लभीय वैष्णव बिगड़ गये और श्याम पर केस करने, तथा उसे ताड़ित करने के लिए तैयार हो गये मन्दिर श्रीराधावल्लभ जी में मीटिंग हुई। चार महानुभाव शृंगारवट में श्रीरसिकानन्द जी गोस्वामी के पास गये और श्याम को बुलवा भेजा—वे यह जानना चाहते थे कि श्याम तो पंजाब से आया है, इसे किसी वृन्दावन के व्यक्ति ने बहका कर ऐसा लिखवा—छपवा दिया है।

श्याम बंगाली में पूर्व—प्रकाशित श्री—राधारससुधानिधि ग्रन्थ को लेकर शृंगारवट पहुँचा। उसने बहुत समय पहले का प्रकाशित ग्रन्थ उनके सामने रखा और बताया कि इसकी भूमिका पढ़िये। मैं नहीं जानता इस ग्रन्थ में परस्पर क्या वाद—विवाद है।

श्याम ने यह भी पूछा—गोस्वामिपाद ! यदि यह ग्रन्थ श्रीहितहरिवंश गोस्वामी जी का है तो आपने आजतक बंगला संस्करणों के खिलाफ कोई कार्यवाही क्यों नहीं की? यदि हिन्दी में छापना या उसे श्रीसरस्वती पाद का बताना जुर्म है तो बंगला में भी जुर्म होना चाहिए। श्रीललिताचरण आदि गोस्वामीगण गम्भीर तथा विचारवान थे, वे समझ गये कि इसकी पीठ पीछे कोई सम्प्रदाय विरोधी व्यक्ति नहीं है। किन्तु विरक्त दो चार राधावल्लभीय बाबाजी ने कोर्ट में जाकर वकीलों से मशविरा किया। उन्होंने स्पष्ट बताया कि यह कोई केसवेस नहीं और इस प्रकार की आलोचनाएँ या मतभेद तो प्रधान मन्त्री जवाहरलाल के

सम्बन्ध में भी प्रकाशित होती रहती हैं—यह सब बात श्याम को उन्हीं वकीलों ने बतायी जिनसे मशविरा उन बाबाजी ने लिया था। वास्तव में यह रचना श्रीप्रबोधानन्द सरस्वती की है। उसके अनेक हिन्दी संस्करण और भी महानुभावों ने छापे और श्याम ने भी उसके कई संस्करण छापे। आज भी उपलब्ध हैं।

श्रीमद्वैष्णवसिद्धान्तरत्न और वृन्दावन शतकों की बिक्री का पैसा जमा होने लगा। श्याम का उत्साह बढ़ गया और श्रीगुरुमहाराज की मौन कृपा का फल शास्त्र कृपा सामने आने लगा। (श्याम की पहली पत्नी सावित्री देवी की रजप्राप्ति का उल्लेख जो पहले किया जा चुका है। वह घटना इन प्रकाशनों के प्रकाशन के बाद की है।)

नवग्रह पूजन क्या करेगा ?

आपकी एक और विशेषता थी कि सभी स्वरूपों का सम्मान करते थे, लेकिन निष्ठा अपने इष्ट प्रिया—प्रियतम में थी। हमारे परिवार में कभी भी किसी प्रकार का व्रत, नवरात्रि, होलिका पूजन, एवं अन्यान्य व्रज के अथवा पंजाब के लोहड़ी आदि उत्सव समारोह सहित नहीं मनाये जाते। उत्सव यदि होते हैं तो प्रिया—प्रियतम के— जैसे जन्माष्टमी, राधाष्टमी, गौरपूर्णिमा, अन्नकूट, विभिन्न जयंतियाँ आदि, वह भी सब श्रीनाम संकीर्त्तन प्रधान होते हैं। जन्माष्टमी है तो ठाकुर जी विराजमान हैं सब परिवारीजन मिलकर जन्माष्टमी के पदगान कर रहे हैं।

एक बार आचार्य पं. श्रीयमुनावल्लभजी द्वारा श्रीमद्भागवत सप्ताह का आयोजन हमारे घर में हुआ। पण्डित जी ने पूछा हकीम जी नवग्रह पूजन आदि के लिए पण्डित को बुलाना है क्या ? पिताजी ने कहा—महाराज जी भगवत् कथा है इसमें नवग्रह पूजन क्या करेगा। श्रीहरिनाम संकीर्त्तन से मंगलाचरण करके कथा प्रारम्भ करें। प्रतिदिन पूर्व में एवं समाप्ति में संकीर्त्तन होता था परिवारीजनों द्वारा। पं. श्रीयमुनावल्लभ जी ने बहुत आशीष दिया और कहा कि मुझे आज लगा कि मैंने किसी गौड़ीयभक्त के यहाँ कथा की है।

व्रज चौरासी कोस परिक्रमा चमत्कार

श्रीश्याम स्मृति

उन्हीं दिनों गोकुल के वल्लभ सम्प्रदायाचार्य के द्वारा व्रजचौरासी कोसी परिक्रमा जानी थी। श्याम के बड़े मामा श्रीनेताराम, मलिक चमनलाल (जो वृन्दावन साथ आये थे), भक्त रूपचन्द खट्टर सब उस परिक्रमा में जाने को तैयार हुए। श्याम की माता सीतादेवी ने भी अपने भाई का साथ देख कर जाने का संकल्प किया और श्याम के पिताजी से आज्ञा मांगी। पिताजी ने गृहिणी को प्रसन्नचित्त से स्वीकृति दे दी। वे बोले कि मैं भी चलूँगा। श्याम की माता और मामाजी दुविधा में पड़ गये। बोले, आप सौ कदम तो चल नहीं सकते, परिक्रमा कैसे करोगे ? फिर हमारा भी मजा बिगड़ेगा, आपकी तीमारदारी, देखभाल करेंगे कि दर्शन–परशन करेंगे। पिताजी ने श्याम से परामर्श किया और बोले, श्याम! तुम तो जानते हो सन् १९४२ से मैं वृन्दावन आने को तैयार हुआ। प्रभु ने विभाजन करा दिया। रास्ते में जितनी बार वृन्दावन के लिए आने लगा, तभी इन टाँगों ने मुझे लाचार कर दिया और तू गोदी में उठाकर यहाँ लाया। मुझे विश्वास है व्रज परिक्रमा से ही मेरे अपराध दूर होंगे और मैं परिक्रमा में जाकर कृतार्थ होऊँगा। श्याम ने उन पर छोड़ दिया। माता और मामाजी से पिताजी बोले, देखिये ! मैं स्वतन्त्र जाऊँगा। केवल मेरा बिस्तर आपके पास रहेगा। चाहो तो मेरी दो रोटियाँ बना कर रख लेना। देर–सवेर जब भी पड़ाव के स्थान पर आऊँगा प्रसाद पा लूँगा और रात को सो जाऊँगा। आपके साथ नहीं चलूँगा, आप स्वतन्त्र और मैं भी स्वतन्त्र। दो–एक साथियों ने श्याम के पिताजी का कड़े शब्दों में विरोध किया किन्तु संकल्प के पक्के श्याम के पिताजी व्रज परिक्रमा में गये। न तो कहीं गाड़ी, रिक्शा, टाँगे में बैठे और न किसी का सहारा लिया।

जिन्होंने रोका था, वे रास्ते में बीमार होकर लौट आये, परिक्रमा पूरी न कर सके। किन्तु श्याम के पिताजी पूरी परिक्रमा पैदल कर आये। ६–७ साल से फोड़ों के कारण जो टांग जकड़ गयी थीं और लंगड़ा कर चलते थे, वह सीधी हो गयी। शरीर हृष्ट–पुष्ट हो गया। दिवाली के दिन अचानक दुकान की सीढ़ी पर आसानी से चढ़कर श्याम के सामने आ खड़े हुए। श्याम के हर्ष की सीमा न रही। पिताजी बोले, श्याम! मैं स्वस्थ हूँ, कहीं नहीं रुका। श्याम के मामा–माता भी आश्चर्य मानते थे। श्रीवृन्दावन निष्ठ श्याम के पिताजी ने सारे व्रजमण्डल के दर्शन–लीला स्थानों के आनन्दपूर्वक दर्शन किये।

श्रीहनुमानजी ने ठाकुर सेवा की

श्रीश्यामस्मृति

श्रीश्यामदास जी की सुपुत्री : हमारी बड़ी बहिन राधेरानी–श्रीगणेशदास चुघ के छोटे सुपुत्र हरिताभ के विवाह का अवसर था। सभी परिवार ने विवाह में देहली जाना था। आपका मन तो था, लेकिन क्योंकि सारा परिवार जा रहा था–ठाकुर सेवा कैसे होगी अतः आपने जाने से मना कर दिया था।

परिवार से कुछ लोग जा चुके थे। अन्तिम खेप कल प्रातः जानी थी। पिताजी को यहीं रहना था। हमारा मन भी बिलकुल नहीं मान रहा था–पिताजी को अकेला छोड़ने हेतु– यद्यपि घर में रहने के लिए परिवारी मित्र व कर्मचारी आदि की समुचित व्यवस्था थी। पिताजी एकमात्र अकेले नहीं थे–फिर भी मन में यह इच्छा थी कि पिताजी भी चलें तो अच्छा रहेगा।

संध्या समय पिताजी ठाकुरजी की शयन कराने हेतु प्रभु मन्दिर में गये, आंखें मूंदी तो सेवा में विराजमान् हनुमान जी बोल उठे– श्याम! चिन्ता क्यों करते हो, मैं हूँ न, मैं सेवा कर दूँगा–तुम विवाह में जाओ। आपने आँखें खोली मन चमत्कृत हो उठा। मन्दिर से बाहर आये तो–मैं भी अन्तिम निर्णय हेतु बैठा था। मेरे से स्वयं बोले–गिरिराज! मैं भी चला चलूँगा तुम्हारे साथ। सब लोग होंगे। मैं न होऊँगा तो राधे दुखी होगी।

और इस बार ठाकुर को बिना शयन कराये आप देहली चले। हमें यह रहस्य न पता चला–न बताया। आज उनकी आत्मकथा में यह प्रसंग पढ़कर सारा रहस्य उजागर हुआ।

कुशल चिकित्सक

चिकित्सा काल की अनेक घटनाएँ ऐसी–ऐसी घटीं कि उनका उल्लेख या संकेत केवल भगवत् कृपा के प्रति कृतज्ञता ही समझना होगा। एक रोगी का कार्बंकल फोड़ा बिना आप्रेशन ठीक करने पर डा० बर्चर्ड, दो नर्सों के साथ श्याम को देखने आयी कि ऐसा यूनानी हकीम कौन है। क्योंकि उसने मरीज को एडमिट होकर आप्रेशन करने को कहा था। मरीज भीरु था–आप्रेशन नहीं कराया। जब ठीक हो गया तो वह भी संदिग्ध अवस्था में फिर डॉ० बर्चर्ड को दिखाने गया वह आश्चर्यचकित रह गयी। तभी वह शाम को दुकान पर देखने आयी। यह वही डॉक्टर बर्चर्ड थी जिसने श्याम के पिताजी को १६ दिन अस्पताल में रखा था और निराश होकर घर जाने को कहा था। ऐसे ही एक जावड़ा का चिरंजीलाल नवयुवक जिसको जलोदर का रोग था। तीन बार उसी डाक्टर से पानी निकलवा चुका था, परन्तु सफलता न मिली। प्रभुकृपा से श्याम के द्वारा वह बिल्कुल स्वस्थ हुआ उसका विवाह हुआ अब भी बालबच्चों सहित कुशल से होगा।

श्याम के घर श्याम आया

श्रीश्याम स्मृति

बड़ा परिवार, एक ही कमाने वाला मैम्बर फिर घर में पिताजी बिस्तर पर। अनेक चिन्ताओं ने घेरा डाल रखा था। रात को उन दिनों कलकत्ते वाले मन्दिर में रासलीला देखने श्याम चला जाता। एक दिन रात को १२ बजे जब घर आया, तो माता ने डाँट दिया। श्याम खिन्न चित्त होकर घर के दरवाजे में न घुसा उलटे पाँव चला गया। वह रात श्याम ने सब्जी मण्डी के चौंतरे पर सोकर बितायी। सवेरे घर आया – ऐसी भी घटना हुई। इतना पैसा भी पास न था। फिर वृन्दावन में कोई दुकान नहीं मिल रही थी। बार–बार पिताजी से श्याम कहता, पिताजी ! क्या करूँ? वे एक ही बात कहते, हम जिसके घर में आये हैं उसे हमारा फिकर है, तुम क्यों चिन्ता करते हो ?

कुछ दिन इस तरह निकल गये। बहुत सा सामान बड़े–बड़े नग तथा श्रीठाकुर सेवा गुड़गाँवां ही छोड़ कर वृन्दावन आये थे। श्याम पिताजी की आज्ञा लेकर गुड़गाँवां सामान उठाने गया। गुड़गाँवां से दिल्ली और दिल्ली से मथुरा की एक प्राईवेट बस में सामान लेकर रात को लगभग आठ बजे मथुरा पहुँचा। डीगगेट पर बस रुकी। सब सवारी चली गयीं। श्याम चौक से टांगा लाया। यहाँ आकर सब सामान उतारा और टांगे में लादा। जब चलने को तैयार हुआ तो बस का ड्राईवर जो शराब के नशे में धुत्त हो रहा था उसने श्याम को कलाई से पकड़ लिया कि तुमने सामान कैसे, क्यों उतारा। बहुत समझाने पर भी वह कुछ सुन न रहा था। कुछ लोग वहाँ थे, वे सब तमाशा देख रहे थे। किसी ने श्याम की सहायता नहीं की।

श्याम ने टाँगेवाले को इशारा दिया तुम बढ़ाओ, मैं आरहा हूँ। श्याम ने एक धक्का मारा शराबी में और भाग कर टाँगे पर जा चढ़ा। वहाँ से चल कर रात के ११–१२ बजे गोविन्द बाग अपने मकान पर पहुँचा। दरवाजा खटखटाया। नीचे उसी मकान में एक पण्डित परिवार रहता था। वह देखकर चकित हो उठा कि तुम इस समय मथुरा से इतना सामान लेकर कैसे सकुशल आ पहुँचे। यहाँ तो ८ बजे बाद टाँगे इक्के लुट जाते हैं। बड़ा आश्चर्य हुआ उसे। श्याम

ने कहा, पण्डित जी ! हमारे सिर पर कोई रक्षक और है, उसकी कृपा से आ पहुँचा। दूसरे दिन श्रीठाकुर सेवा आरम्भ की। मन को बड़ी शान्ति मिली। लगता है श्रीठाकुरजी ही दुकान दिलाने में देर करा रहे थे। दुकान मिल जाती तो वे जल्दी गुड़गाँवां से न आ पाते। खाली समय में श्याम को प्रेरणा की, और आप स्वयं रक्षक बन कर सेवा ग्रहण करने शीघ्र वृन्दावन आ गये।

दो दिन बाद तुरन्त दुकान मिल गयी जिस पर अब भी श्याम के पौत्र–नाती बैठते हैं। साल भर की पेशगी ६ रुपये मासिक किराया दे दिया। फिर तो तीनों फड़ उस दुकान के श्याम ने लिए, वे खाली हो गये, पूरे लोई बाजार में ३ फड़ की सबसे बड़ी दुकान है यह आज भी। दूसरी ओर की भी ३ फड़ की दुकान १८ रु० मासिक किराये पर ली। जिसे श्याम ने दूसरा बड़ा मकान किराये पर मिलने पर छोड़ दिया।

कालादेव : श्रीगोपीनाथजी

१५ अगस्त सन् १९४७ की रात को ही शहर के चारों ओर गाँवों में यवनों ने कतले–आम कर अपने पूर्व इतिहास को दुहराया। जुल्म, लूट–हत्या बहू बेटियों का अपहरण भयंकर नंगा नाच किया। परन्तु डेरागाजीखान् शहर में ऐसी कोई वारदात एक भी न घटी। और मिल्ट्री द्वारा सब शहर–वासियों एवं गांववासियों को अपने संरक्षण में भारत में पहुँचा दिया गया। उस दिन के बाद यवनों ने अनेक बार हिन्दु आबादी में घुसने का यत्न किया परन्तु यवन दारोगा तथा अंग्रेज डी. एम. और सी. एम. ने ही उनको गोलियों से भून डाला। दारोगा कहता था कि एक काला सा देव सिंह के रूप में मेरी छाती पर हर समय सवार है और कहता है यदि एक भी हिन्दु मारा गया तो तुम्हारे सब वंश को खा जाऊँगा। ब्लैक आउट, धारा १४४, कर्फ्यू लगाये गये थे। आश्चर्य की बात यह है कि सवेरे संकीर्तन में तथा सन्ध्या को सत्संग में पचासों स्त्री–पुरुष भाग लेते रहे, उन्हें मिल्ट्री के किसी व्यक्ति ने न रोका। बड़े बूढ़े ओवरसियर, रिटायर्ड, रिटायर्ड स्टेशन मास्टर, आनरेरी मैजिस्ट्रेट, नगरपालिका के मैम्बर सब लैम्प और टार्च ले लेकर सत्संग में प्रतिदिन एकत्रित होते। बाहर बाजार चौराहे पर मिल्ट्री मैन खड़े रहते उन्हें कोई भी कुछ न कहता।

आत्मकथा.....

अनेक बार अनेक लोगों ने श्रीश्यामदासजी से कहा कि आप अपनी जीवनी लिखें जिससे सभी लोग आपके जीवन से शिक्षा प्राप्त कर सकें, लेकिन वे कहते कि जीवन चरित्र तो सन्तों के होते हैं, मैं तो एक साधारण जीव हूँ– मेरी क्या जीवनी ?

एक बार मेरी छोटी बहिन पिताजी से बहस में अड़ गयी और बोली कि आपका जीवन तो सदैव भगवद्कृपा-भगवद्शक्ति से पूर्ण रहा है-आप अपनी बात मत लिखिये जब-जब आपने भगवद्कृपा का अनुभव किया-आप उन प्रसंगों को लिखिये- भगवद्कृपा का प्रचार-प्रसार करने में क्या हर्ज है ? पिताश्री उसका उत्तर न दे सके और बोले ठीक है, मैं प्रयास करूँगा। जितना समय मैं अपना चरित्र लिखने में नष्ट करूँगा, उतने में तो एक ग्रन्थ और सम्पादित हो जायेगा। बात आयी गयी हो गयी। कालान्तर में एक-दो बार जब चित्रा ने स्मरण दिलाया कि आप लिख रहे हो या नहीं तो बात को घुमा जाते थे और अपने जीवन काल में उन्होंने कभी भी किसी से जिक्र नहीं किया कि उन्होंने कोई आत्मकथा लिखी है। उनके लीला प्रवेश के पश्चात् उनके कक्ष से अचानक यह हस्तलिपि ग्रन्थों के बीच में दबी हुयी पायी गयी।

उनके जीवन क्रम या चरित्र को आद्योपान्त लिखा जाय तो एक विशाल ग्रन्थ बन जायेगा-लेकिन उन्होंने केवल उन प्रसंगों का ही उल्लेख किया है-जहाँ-जहाँ उन्होंने भगवद्कृपा का साक्षात् अनुभव किया। एक पुत्र के रूप में जबसे मैंने होश सम्भाला, मैंने उनके चरित्र एवं व्यक्तित्व में अनेक विशेषताओं को देखा। उनका उल्लेख मैंने इस ग्रन्थ में प्रायः प्रत्येक पृष्ठ पर किया है। मेरा विश्वास है कि निकट से उनके सम्पर्क में रहने वाले समस्त सज्जनों ने इन बातों को उनमें अवश्य देखा होगा।

मुण्डन शिक्षा यज्ञोपवीत श्रीवृन्दावन में

श्रीश्याम स्मृति

श्रीरघुनाथदास अपनी निष्ठानुसार यथासमय सपरिवार वृन्दावन आये और श्याम का मुण्डन श्रीबिहारी जी मन्दिर के चौंतरे पर विधिपूर्वक सम्पन्न कराया। व्रजवासियों, तीर्थपुरोहित को यथाशक्ति दान–मान देकर सन्तुष्ट किया।

श्याम अभी ४ वर्ष का ही था कि श्रीपिताजी ने उसे श्रीस्वामी जी के पास अक्षरबोध–शिक्षा के निमित्त भेजना आरम्भ कर दिया। बड़े भाई ईश्वरदास की बीच की लड़की उत्तमीदेवी स्वामी जी से श्रीगीता पढ़ने जाती थी। श्याम उसके साथ जाने लगा। पांचवें वर्ष प्राथमिक शिक्षा के लिए स्कूल में दाखिल करा दिया।

बाल्योचित चञ्चलता, खेलकूद में रुचि होते हुए भी श्याम प्रखर बुद्धि होने से स्कूल में अच्छे छात्रों में गिना जाता। सातवीं क्लास तक सामान्य हिन्दी–अंग्रेजी तथा उर्दू की शिक्षा प्राप्त कर आठवें क्लास में श्याम ने संस्कृत का विषय लिया और पिताजी ने उसे फारसी का अध्ययन कराने का प्राईवेट प्रबन्ध कर दिया। गेम्स, स्काउटिंग में अभिरुचि के साथ बांसुरी वादन में स्कूल की ओर से शिक्षा प्राप्त कर स्कूल के बैण्ड में एक कुशल बाँसुरी–वादक माना जाने लगा। स्कूल टाइम में अनेक स्काउट रैलियों में तो भाग लेता ही था। स्कूल से मैट्रिक पास कर लेने के बाद भी हैडमास्टर श्रीरामरतन जी की प्रेरणा से स्काउट ट्रिप के साथ सन् १९३७ में कुरुक्षेत्र के सूर्यग्रहण विशाल मेले में भी बैण्ड के साथ उसने शमूलियत की। अति सुखद था छात्र–जीवन।

इसी बीच में सन् १९३२ में श्रीरघुनाथ दास सपरिवार वृन्दावन आये और श्याम का यज्ञोपवीत संस्कार श्रीशृंगारवट में श्रीमन्महाप्रभु श्रीनिताई–गौर के चरण– सान्निध्य में सम्पन्न कराया।

तत्पश्चात् जयपुर, श्रीनाथद्वारा, पुष्कर आदि तीर्थों की यात्रा करते हुए सकुशल घर लौटे। तीर्थयात्रा का सब विवरण श्याम को अच्छी तरह याद रहा।

स्कूल से १९३७ मार्च में मैट्रिक पास कर श्याम को पिताजी ने अपनी गद्दी पर बैठा दिया और रोगियों को दवा देना, रोगों की

परिचय मूलक शिक्षा देने लगे। हितैषी सज्जनों विशेषतः स्कूल के शिक्षकों का आग्रह था कि श्याम को मैडीकल कालेज भेज कर अच्छी शिक्षा–डाक्टरी पढ़ाओ। किन्तु स्वयं श्याम ही इसका पक्षधर न था।

उसे उस चिकित्सा पद्धति से नैसर्गिक घृणा सी थी। श्रीपिता रघुनाथदासजी के तत्त्वावधान में हिकमत यूनानी में श्याम एक कुशल हकीम की तरह स्थापित होने लगा। श्याम माता–पिता का इकलौता बेटा था, अभी १७ वर्ष का था कि उसका विवाह एक संभ्रात परिवार की कन्या से सम्पन्न हुआ, उस कन्या की एक छोटी बहन थी शेष सारा परिवार क्वेटा के अतिशय विनाशकारी भूकम्प में समाप्त हो चुका था।

भगवद्भक्ति केन्द्रित

एक सफल व्यक्ति, एक सफल गृहस्थ, एक सफल सेवक होने का एक मात्र कारण था कि श्रीश्यामदास जी के जीवन के मूल में भगवद्भक्ति थी। वह संसार के सारे कार्य करते थे लेकिन उसी तरह जैसे उद्देश्य पूर्ति के मार्ग में पड़ने वाले सभी कार्यों को व्यक्ति करता है।

जब हम ट्रेन से मुम्बई जा रहे होते हैं तो रास्ते में यात्रियों से बातें भी करते हैं। कभी सो जाते हैं। कभी उठ बैठते हैं। कभी चाय पीते हैं। कभी ट्रेन से उतरकर टहलते हैं। भोजन करते हैं। किसी वृद्ध या वृद्धा को ट्रेन से उतार देते हैं। किसी बच्चे को ठॉफी देते हैं आदि ये सब कार्य हमारे उद्देश्य नहीं है–हम सहज भाव से इन्हें करते रहते हैं। हमारा उद्देश्य होता है मुम्बई पहुँचना।

उसी प्रकार पूज्य पिताजी अपनी जीवन यात्रा में अनासक्त भाव से सारे कार्य करते चले गये-लेकिन उनकी दृष्टि केन्द्रित होती थी भगवद्भक्ति पर जिसके लिए आजीवन उन्होंने श्रीहरिनाम संकीर्तन का आश्रय लिया।

दीक्षा वृन्दावन में

श्रीश्याम स्मृति

कुल परम्परानुसार–विवाह के समय श्याम को गुरु दीक्षा वृन्दावन में आकर दिलाने का श्याम के श्रीपिताजी का दृढ़ विचार था, किन्तु दैवयोग से श्याम की बड़ी बहन रामदेवी तथा उसके एक साल बाद उनके पति का स्वर्गवास हो चुका था। लोक मर्यादानुसार श्याम की माता सीतादेवी वृन्दावन आने को तैयार न हुई। परन्तु पिता श्रीरघुनाथदास जी गुरुदीक्षा कार्य को लौकिक मर्यादा से बहुत ऊँचा मानते थे। उन्होंने श्याम को तथा नवविवाहिता वधू सावित्री को लेकर वृन्दावन जाने का यथाशीघ्र निश्चय किया।

श्याम के पिताजी का कुल श्रीमन्नित्या–नन्दवंश परम्परा में डेरागाजीखान के गोस्वामी श्रीश्यामदास के परिवार का शिष्यत्व ग्रहण करता आ रहा था। काल–प्रभाव से उस समय गोस्वामी श्यामदासजी के परिवार में प्रायः सब लोग सरकारी नौकरी में नियुक्त थे। एकमात्र एक विधवा बहु विद्यमान थी। वे गोस्वामिवृन्द सब शृंगारवट से दीक्षित थे। उन्होंने श्रीहकीम जी से आग्रह किया कि श्याम को यहाँ हमारे में से किसी से दीक्षा दिलवाओ। परन्तु श्याम के पिताजी हाथ जोड़ कर यही कहते– गोस्वामिपाद ! आप अपने गुरुवर्ग से दीक्षा का विरोध क्यों करते हैं ? यह संस्कार जीवन का अति महत्त्वपूर्ण संस्कार है। मुझे शृंगारवट जाकर ही इसे दीक्षित कराना है।

मार्च सन् १९३८ होलियों में हरिद्वार के कुम्भ से पहले वृन्दावन में कुम्भ का पड़ाव था। पिताजी उसी समय श्याम को सपत्नीक वृन्दावन ले आये। पिताजी के तीनों भाई, माँ तथा अति प्रिय मित्र श्रीकेशवदास भी साथ थे।

श्रीवृन्दावन में कुम्भ मेला के उपलक्ष्य में अनेक उत्सव मनाये जा रहे थे। पता लगा कि संन्ध्या के समय श्रीशृंगार वट के श्रीगौर निताई प्रभु की सवारी निकल रही है। हम सब गोपेश्वर महादेव पर थे। सामने से ठाकुर जी का डोला दीखा, परन्तु उसके पहले एक अचेत व्यक्ति को अनेक लोग कन्धे पर उठाये आ रहे थे। चारों ओर वैष्णव मृदंग–ताल के साथ उच्च ध्वनि में नृत्यगान करते हुए चल रहे थे। श्याम के छोटे चाचा प्रीतमदास श्याम को लेकर भीड़ को चीरते हुए वहाँ निकट जा पहुँचे। देखते ही उन्होंने कहा, श्याम ! ये महापुरुष शृंगारवट के गोस्वामी श्रीपाद देवकीनन्दन जी हैं जो नाम–प्रेम में मूर्च्छित

अवस्था को प्राप्त हो रहे हैं। इनसे तुम्हें दीक्षा दिलाने का तुम्हारे पिताजी ने निश्चय कर रखा है। श्याम के आश्चर्य और चिन्ता का ठिकाना न रहा कि जाने श्रीगोस्वामी जी महाराज को क्या हो गया। प्रीतम दास ने श्याम को कहा इनके चरण पकड़ लो दसों वैष्णव चरणों को पकड़े हुए थे, कोई हाथों को, कोई कन्धों पर उठाये हुए थे। श्याम ने देखा मृदंग की ताल के साथ उनके चरण, सारे अंग नाच रहे हैं, कितने जोर से पकड़ने पर भी उनकी फड़कन रुकती नहीं।

श्रीगोपेश्वर महादेव पर आते ही श्रीगोस्वामी प्रभुपाद श्रीदेवकीनन्दन जी चीत्कार मार कर उठ खड़े हुए किन्तु उनके सारे वस्त्र आंसुओं–स्वेद से भीग रहे थे। सवारी आगे बढ़ी, लालाबाबू मन्दिर पर आकर गोस्वामी जी हुंकार करते हुए श्रीमहाप्रभु डोला की तरफ एक दम भागे और पृथ्वी पर गिर गये। उनके दाँतों में, मस्तक पर चोट आयी। जैसे–तैसे वैष्णव उनको सम्भालकर चल रहे थे, परन्तु उनकी प्रेमोन्माद दशा श्याम के लिए बिल्कुल नयी थी जिसका वह अनुमान भी न कर पा रहा था। (श्रीगोस्वामी जी का विस्तृत चरित्र श्रीनिताई चाँद में श्याम ने वर्णन किया है)।

श्रीगोस्वामी जी की आज्ञा के अनुसार दूसरे–तीसरे दिन श्रीरघुनाथदास जी ने श्याम को उनसे दीक्षा दिला कर उनके चरणाश्रित कर दिया। कुछ दिन वृन्दावन में भ्रमण, रास दर्शन में सबने आनन्द उठाया।

आवे जावे नारद का तुम राज करते रहो

जीवन में अनेक अवसरों पर वे इस मुहावरे को सुनाते थे। विशेषतः भौतिक उपलब्धियों के बारे में जब हम उनसे कहते- 'पिताजी हमने कल एक नयी कार लेनी है' -तो तुरन्त कहते थे-आवे जावे नारद का तुम राज करते रहो' -यानि यह जो धन सम्पत्ति है यह सब प्रभु की है-तुम उसकी कृपा का अनुभव करते हुए सुखी होओ इसमें अपना कुछ प्रयास मत समझो-न इनमें आसक्त रहो। निर्लिप्तता तभी आती है जब उसमें मैं, मेरा, ममत्व नहीं होता है। प्राप्ति में हर्ष एवं खोने में विषाद होगा ही नहीं, जब उसमें ममत्व या आसक्ति नहीं होगी-अतः जो भी आता है या जाता है उसे नारद यानि प्रभु का समझो।

पंडित बाबा श्रीरामकृष्ण दास जी

श्रीश्याम स्मृति

एक दिन घूमते–घूमते श्रीरघुनाथदास जी अपने बड़े भाई ईश्वरदास तथा मित्रों के साथ दाऊजी की बगीची में सिद्ध पंडित बाबा श्रीरामकृष्णदास के दर्शनों को पहुँचे। श्रीबाबा ने श्रीरघुनाथदासजी को अपने नगर में जाकर श्रीनाम संकीर्त्तन प्रचार करने की आज्ञा दी, अद्‌भुत कृपा शक्ति का संचार किया। दुर्भाग्य श्याम के, वह उस दिन अपनी स्त्री की देख–रेख में धर्मशाला में रह गया क्योंकि उसे कालरा की सी तकलीफ हो रही थी। इस दैव घटना ने श्याम को बाबा के दर्शनों से वंचित रखा। परन्तु पिता श्रीरघुनाथ दासजी के माध्यम से श्याम पर जो सिद्ध बाबा की कृपा हुई, वह अवर्णनीय है, जिसका साक्षात् अनुभव वृन्दावन आकर किया।

श्रीगुरुदीक्षा के बाद श्याम में कुछ एक विलक्षण परिवर्तन आ गये। प्रथम तो उसमें कवित्व शक्ति उदित हो उठी। व्रजभाषा उर्दू आदि में अनेक रचनाएँ उसे स्फुरित होने लगीं। घर पहुँचने पर उसने अपनी माता सीतादेवी से घर में विराजमान श्रीठाकुर सेवा सँभाल ली। यथा–प्रेम श्याम उनकी सेवा–शृंगार में तन्मय रहने लगा। एकदिन सेवा के बाद जब श्याम आसन पर बैठकर गुरुमन्त्र तथा ध्यानपूर्वक नाम जप कर रहा था कि उसका **आसन ऊँचा उठा और द्विछत्ती की छत जो केवल ६ फुट पर थी उससे जा टकराया। टकराते ही जोर से गिरने की आवाज हुई और श्याम के मुँह से भी शब्द निकले जिसे सुन कर उसकी माता दौड़ी आयी कि क्या गिरा।** वास्तव में न कुछ गिरा था न आसन ऊँचा उठा था। तन्मयता के कारण ऐसा हुआ। श्याम ने माता को कहा कुछ नहीं गिरा–ऐसा ध्यान में जाने क्या हुआ?

दोपहर का समय, गरमी के दिन दुकान पर श्याम के पिताजी भीतर के कमरे में विश्राम कर रहे थे। श्याम दुकान के बाहर वाले कमरे में सो रहा था। स्वप्न में वह जोर से काँपते हुए रोने लगा। नींदमें ऐसा रोया कि रोने की आवाज बाहर भी निकल रही थी। पिताजी झट उठकर भागे आये कि क्यों रो रहा है ? श्याम को जगाया तो पसीने में तर–बतर था। उसने बताया कि श्रीगोस्वामी जी महाराज मुझे आलिंगन कर रो रहे थे। श्याम के पिताजी इन सब भावों के जानकार थे ही।

सात्त्विक विकार

श्रीश्याम स्मृति

एक बार श्रीवृन्दावन से शृंगारवट के श्रीगोस्वामी श्यामानन्द, बाबा स्वरूपदास को लेकर पधारे। वे श्याम के श्रीगुरु–पुत्र थे। संकीर्त्तन हाल में रात्रि के समय उनका प्रवचन निश्चय हुआ। सैंकड़ों स्त्री–पुरुष उनके दर्शन और प्रवचन सुनने को आये। प्रवचन करते–करते श्रीनामध्वनि महिमा कहते हुए श्रीगोस्वामीजी में ऐसा सात्त्विक विकार कम्प हुआ कि पालती मारे–मारे ऐसे उछले कि उनका मुंह पीछे और पीठ श्रोताओं की तरफ हो गयी। अत्यन्त आश्चर्य का विषय था यह दृश्य।

दूसरे दिन निर्जला एकादशी थी उन्होंने तथा बाबा स्वरूपदास ने एकादशी की रात को श्रीनामसंकीर्त्तन जागरण का बड़ा माहात्म्य वर्णन किया। प्रति एकादशी को श्रीनिताई–गौर मन्दिर–गोस्वामिनी किशीबाई की पाठशाला में सब संकीर्त्तन प्रेमी सहज एकत्रित होते थे। श्रीरघुनाथ दास, उनके बड़े भाई ईश्वरदास आदि अनेक गोस्वामी अवश्य भाग लेते थे।

श्याम ने उसदिन निर्जला एकादशी व्रत रखा हुआ था। रात को संकीर्त्तन करते–करते वह तो बिल्कुल मूर्च्छित होकर गिर गया। हारमोनियम कहाँ और वह तो पूरी तरह बेहोश। श्यामके पिताजी, ताऊजी नाम के इस सात्त्विक विकार को जानते थे। उन्होंने सब से जोर–जोर से नाम करने को कहा–श्याम के मुँह पर पानी के छींटे मारे गये। अनेक देर तक जब उसकी दशा स्वस्थ होती न दीखी तब श्रीगुरुपुत्र श्यामानन्द गोस्वामी जी स्वयं उठे और श्याम के कान में जाने कितने जोर से चिल्ला–चिल्ला कर कृष्णनाम सुनाया, तब कहीं श्याम ने आँखें खोलीं। सब को चैन पड़ा–यथासमय संकीर्त्तन ने विश्राम लिया। श्याम की माता ने जब यह समाचार सुना तो वह श्याम के पिता जी से बहुत बिगड़ी कि "आप लड़के को पागल बनाना चाहते हो क्या ? उसे मैं संकीर्त्तन में नहीं जाने दूंगी", श्याम के पिताजी तो श्रीनित्यानन्दप्रभु के वंशज गोस्वामिवृन्द की ऐसी अवस्थाओं को देख चुके थे। वह दिल में श्रीगुरुकृपा जानते थे। श्याम की माता को समझा–बुझा कर आश्वस्त कर देते।

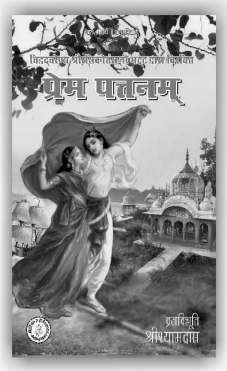

ISBN : 978-93-84836-59-7

नवीन प्रकाशन

150/- रु

हमारे बैंक में जमा कराकर घर बैठे प्राप्त करें। अमेजन पर भी उपलब्ध।

गोस्वामी श्रीरघुनाथभट्ट परम्परानुवर्ती
श्रीगदाधरभट्ट जी के सुपुत्र परम रसिक
श्रीरसिकोत्तंस जी भट्ट द्वारा प्रस्तुत
यह ग्रन्थरत्न अद्भुत रस से ओतप्रोत है.

मधुरमेचक श्रीकृष्ण इस प्रेमपत्तनम् नामक
नगर के राजा हैं, उनकी दो पत्नियां है-
एक रति, दूसरी मति. वे रति को
अधिक स्नेह करते हैं और उस नगर के
प्रशासक के रूप में उन्होंने रति को
नियुक्त कर दिया है.

मति माने विधि, रति माने प्रेम.
और 'प्रेम नदिया की सदा उल्टी बहे धार'-
इस वाक्य के अनुसार इस नगर में
उल्टी धार बह चली है.
यहाँ अधर्म ही धर्म है, अविनय ही विनय है,
स्त्रियाँ ही पुरुष हैं, चंचल ही धीर हैं,
जो हारेगा-उसकी इच्छा चलेगी,
यहाँ सुख ही दुख है. आदि....
अद्भुत, परम अद्भुत ग्रन्थ
हृदय में अपूर्व रस का संचार कर
पाठक को सराबोर कर देता है.

-दासाभास डॉ गिरिराज

ISBN 938483659-1
9789384836597

M059

वैष्णव साहित्य प्रचार-प्रसार में संलग्न अव्यावसायिक संस्थान
श्रीहरिनाम संकीर्तन मण्डल, श्रीधाम वृन्दावन

आवरण-कथा

रनवारी

डॉ भागवत कृष्ण नांगिया

सिद्ध बाबा श्रीकृष्णदास जी की भजन स्थली के रूप में ब्रज का रनवारी ग्राम प्रसिद्ध है। सम्प्रति यहाँ बाबा की समाधि, श्रीश्रीराधाकृष्ण का मन्दिर और सामान्य सा एक आश्रम है जहाँ पौषी अमावस्या को प्रतिवर्ष बाबा का विरह उत्सव ग्राम के ही ब्रजवासियों द्वारा आयोजित किया जाता है। सम्पूर्ण व्रजमण्डल के साधु–वैष्णव–गृहस्थी–विरक्त सभी अपनी पुष्पांजलि समर्पित कर बाबा का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। एक मेला जैसा माहौल वहाँ बन जाता है। अवश्य दर्शनीय है। एनएच–२ पर स्थित छाता ग्राम से ४–५ किमी. अन्दर यह ग्राम अवस्थित है।

सिद्धबाबा बाल्यकाल से ही ब्रज में आ गये थे। प्रायः ५० वर्ष बीत गये। इनके मन में तीर्थयात्रा की वाञ्छा जागी कि एक बार चार धाम यात्रा कर आऊँ, किन्तु श्रीप्रिया जी ने इनको स्वप्न में आदेश दिया, तुम श्रीवृन्दावन में आये हो। इस धाम को छोड़ कर अन्यत्र न जाना, यहीं रह कर भजन करो, यहीं तुम को सर्वसिद्धि लाभ होगी। किन्तु इन्होंने श्रीजी के स्वप्नादेश को अपने मन और बुद्धि की कल्पना मात्र समझकर उसकी कोई परवाह न की और तीर्थ भ्रमण को चल पड़े। भ्रमण करते–करते जब द्वारका जी पहुँचे तो वहाँ तप्तमुद्रा की शरीर पर छाप धारण कर ली। यह श्रीवृन्दावनीय रागानुगीय वैष्णवों की परम्परा के सम्मत नहीं है। तत्क्षण ही उनका मन बड़ा खिन्न हो उठा और तीर्थ में अरुचि हो उठी। आप तुरन्त ब्रज में लौट आये। जिस दिन व्रज में लौटकर आये उसी रात्रि में श्रीप्रिया जी ने पुनः इनको स्वप्न दिया और बोलीं– तुमने द्वारका की तप्तमुद्रा ग्रहण की है अतः तुम अब सत्यभामा के परिकर में हो गये हो, अब तुम ब्रजवास के योग्य नहीं हो। द्वारका ही चले जाओ।' इस बार किन्तु यह स्वप्न इन्हें कल्पित नहीं लगा किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो इन्होंने ब्रज के कितने ही सिद्धबाबा आदि लोगों से जिज्ञासा की, सबने श्रीप्रियाजी के ही आदेश का अनुमोदन किया।

हताश हो कुटिया में प्रवेशकर इन्होंने अन्नजल त्याग दिया। अपने किये के अनुताप से और श्रीप्रियाजी के विरह से हृदय जलने लगा। कहते हैं, इसी प्रकार बाबा ३ महीने तक रहे। अन्ततः अन्दर की विरहानल बाहर शरीर पर प्रकट होने लगी। तीन दिन तक चरण से मस्तक पर्यन्त क्रमशः अग्नि से जलकर इनकी काया भस्म हो गई। अचानक रात में सिद्ध बाबा श्री जगन्नाथदासजी ने अपने शिष्य श्रीबिहारीदास जी से कहा, देखो तो, इस घर में (बाबा की कुटिया में) क्या हो रहा है ? उसने अनुसंधान लगाया तो कहा कि रणवाड़ी के बाबा का देह जल रहा है। अन्दर से सांकल बन्द थी।

किवाड़ को तोड़कर अन्दर गये, सबने देखा कण्ठ पर्यन्त अग्नि आ चुकी है। श्रीबिहारीदास से थोड़ी रुई मँगवाकर उन्होंने उसकी तीन बत्तियाँ बनाई और ज्यों ही उन्होंने उनके माथे पर रखीं कि एक दम अग्नि ने आगे बढ़कर सारे शरीर को भस्मसात कर दिया। इस अवस्था में भी वे स्फुट रूप से नामोच्चारण कर रहे थे। ब्रजवासीगण को अत्यन्त कातर देख बाबा आशीर्वाद देते हुए बोले– तुम्हारे गाँव में कभी दुःख न आयेगा। भले ही चहुँ ओर दुर्भिक्ष और महामारी फैले'। आज तक उनकी वाणी का प्रत्यक्ष प्रमाण देखा जाता है।

व्रजविभूति श्रीश्यामदासजी का भक्ति साहित्य

10

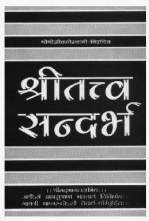

ग्रन्थ नाम : श्रीतत्त्व सन्दर्भ
लेखक : श्रीजीव गोस्वामिपाद
भाषा : संस्कृत–हिन्दी अनुवाद–टीका
साइज : 15 × 23 सेमी
पृष्ठ : 204 हार्ड बाउण्ड
मूल्य : 225 रुपये
विषय वस्तु : परतत्त्वनिर्णायक श्रीमद्भागवत पर प्रतिष्ठित षड्सन्दर्भात्मक श्रीभागवत
M046 - Ed2 सन्दर्भ का प्रथम सन्दर्भ

www.harinampress.com

ग्रन्थ नाम : श्रीभगवत् सन्दर्भ
लेखक : श्रीजीव गोस्वामिपाद
भाषा : संस्कृत–हिन्दी अनुवाद–टीका
साइज : 15 × 23 सेमी
पृष्ठ : 404 हार्ड बाउण्ड
मूल्य : 450 रुपये
विषय वस्तु : भगवान् श्रीनारायण तथा वैकुण्ठ लोक का सपार्षद विस्तृत वर्णन
M047 - Ed2 (दूसरा सन्दर्भ)

www.harinampress.com

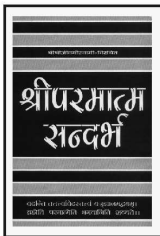

ग्रन्थ नाम : श्रीपरमात्म सन्दर्भ
लेखक : श्रीजीव गोस्वामिपाद
भाषा : संस्कृत–हिन्दी अनुवाद–टीका
साइज : 15 × 23 सेमी
पृष्ठ : 228 हार्ड बाउण्ड
मूल्य : 225 रुपये
विषय वस्तु : परमात्म स्वरूप का सूक्ष्मातिसूक्ष्म विवेचन (तीसरा सन्दर्भ)
M048 - Ed1

www.harinampress.com

ग्रन्थ नाम : श्रीकृष्ण सन्दर्भ
लेखक : श्रीजीव गोस्वामि पाद
भाषा : संस्कृत–हिन्दी अनुवाद–टीका
साइज : 15 × 23 सेमी
पृष्ठ : 416 हार्ड बाउण्ड
मूल्य : 300 रुपये
विषय वस्तु : परब्रह्म स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण का सम्बन्ध तत्त्व रूप में प्रतिपादन
M049 - Ed1 (चौथा सन्दर्भ)

www.harinampress.com

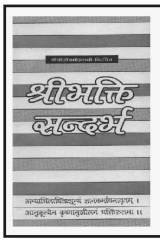

ग्रन्थ नाम : श्रीभक्ति सन्दर्भ सचित्र
लेखक : श्रीजीव गोस्वामिपाद
भाषा : संस्कृत–हिन्दी अनुवाद टीका
साइज : 15 × 23 सेमी
पृष्ठ : 616 हार्ड बाउण्ड
मूल्य : 450 रुपये
विषय वस्तु : सम्बन्ध तत्त्व परब्रह्म श्रीकृष्ण की प्राप्ति के परमोपाय भक्ति का
M050 - Ed2 निरूपण (पाँचवाँ सन्दर्भ)

www.harinampress.com

सत्साहित्य
एवं विशेषत:
भक्ति साहित्य
के ये ग्रन्थ
एक ऐसी निधि है
कि यदि
आप इनका
अध्ययन करें तो
कल्याण होता ही है
और इन्हें यदि
घर में
विराजमान कर
इनका दर्शन, आरति
करें तब भी
कल्याण होता है
और
संभावना रहती है कि
कभी कोई
इनका अध्ययन कर
जीवन
धन्य करेगा
•
उपहार
तो इससे अच्छा
कोई हो ही
नही सकता।

10

Online Books के लिये www.shriharinam.com पर visit करें

दिसम्बर 2018 संवत् 2075 गौरांगाब्द 533
मार्गशीर्ष कृष्ण नवमी से पौष कृष्ण दशमी तक

वैष्णव व्रतोत्सव

03	सोम	एकादशी	श्रीउत्पन्ना एकादशी व्रत। अमृतसर में दुग्गल जी के निवास पर रात्रि जागरण। श्रीनाम संकीर्तन। पारण कल 9/41 तक।
06	गुरु	चतुर्दशी	श्रीपाद रामदास बाबा तिरो. महो. पाठबाड़ी।
11	मंगल	चतुर्थी	श्रीनित्यानन्द प्रभु सुपुत्र श्रीवीरचन्द्र प्रभुपाद आवि. महो.।
12	बुध	पंचमी	श्रीबिहार पंचमी। बिहारी जी प्राकट्योत्सव।
15	शनि	अष्टमी	सिद्ध मधुसूदन दास बाबा तिरो. सूर्यकुण्ड।
18	मंगल	दशमी	श्रीकुंजबिहारी दास बाबा जी म. श्रीराधाकुण्ड। 5120 वी श्रीमद्भगवद् गीता जयंती।
19	बुध	द्वादशी	व्यंजन द्वादशी व्रत। पारण 9/09 तक।
20	गुरु	त्रयोदशी	खिचड़ी भोग प्रारंभ। श्री गौरांगदास बाबा श्रीराधारमण निवास तिरो. महोत्सव।
23	रवि	प्रतिपदा	श्रीकृष्णकृपाधाम में डॉ. जी.के. अग्रवाल एवं परिवार द्वारा आयोजित श्रीमद्भागवत सप्ताह कथा प्रारंभ।

आनन्द वर्षा....

● 1 से 4 सितम्बर तक श्रीनित्यानंद सेवाश्रम ट्रस्ट द्वारा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव आयोजित किया।

● श्रीभागवत निवास में 20 से 29 सित. तक पंडित बाबा का तिरोभाव उत्सव सम्पन्न हुआ जिसमें श्रीपुण्डरीक गो. जी द्वारा दिव्य कथामृत का पान कराया।

● 13 से 26 अगस्त पर्यन्त जैसिंह घेरा में रस महोत्सव समायोजित हुआ।

● ब्रजकला केन्द्र द्वारा 14 सित. को श्रीराधाष्टमी महोत्सव दिल्ली में सम्पन्न हुआ।

● जिन्दल परिवार द्वारा 13 से 19 अग. श्रीमद्भागवत भक्ति सत्र आयोजित हुआ कथा व्यास थे आचार्य श्रीरामाकान्त गो.।

● सत्यसनातन सेवार्थ संस्थान द्वारा श्रीमद्भागवत कथा रसवृष्टि का आयोजन हुआ। व्याथ थे श्रीमारुति नन्दन वागीश।

● छठा वराह जयंती उत्सव 12 सित. को जैसिंह घेरा में, वृन्दावन बन्धु द्वारा आयोजित किया गया।

● श्रीराधाश्याम सुन्दर मंदिर में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव विशाल आयोजन सहित आयोजित हुआ।

● श्रीविनीत नारायण जी की पूज्य मां की पंचम ब्रजरस प्राप्ति तिथि 8 अक्टूबर को एक गोष्ठी का आयोजन हुआ।

● 15 सित. को संस्कार भारती द्वारा निम्बार्क स्कूल में श्रीराधाकृष्ण युगल रूप सज्जा प्रतियोगिता आयोजित हुयी।

● संस्कृति निदेशालय उ.प्र. द्वारा बरखा बहार श्रीराधाष्टमी महोत्सव का आयोजन हुआ बरसाना में।

● श्रीराधाष्टमी अवसर पर भैया किशनदास जी द्वारा अति आनंद मय रस वर्षण हुआ बरसाना में।

● शोध संस्थान द्वारा पुराणों में अवतार विमर्श विषय पर संगोष्ठी आयोजित हुयी 26 सित. को।

● पौराणिक ब्रह्मकुण्ड पर 28 से 30 सित. सांझी मेला का आयोजन हुआ ब्रज फाउण्डेशन द्वारा।